जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 46 संख्याः 201 प्रभात कोटा, मंगलवार 4 मई, 2021 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 8 मूल्य 1.20 रु.

लगभग 200 संकटग्रस्त ''ऑरैंन्ज बैलीड पैरैंट्स,'' जिनके पेट पर ऑरैंज रंग का चकत्ता होता है, ने टैस्मेनिया से ऑस्ट्रेलिया के मेनलैण्ड के लिए अपना वार्षिक प्रवास शुरु कर दिया है। नब्बे के दशक में इनकी मॉनिटरिंग शुरु हुई थी, उसके बाद से पहली बार इतनी बड़ी तादाद में पक्षी प्रवास कर रहे हैं। टैस्मेनिया के इन तोतों पर काम कर रहे शोधकर्ताओं ने कहा कि राज्य के दक्षिण पश्चिम क्षेत्र, मैलालूका में प्रजनन काल की समाप्ति के बाद 192 पक्षी गिने गए थे जिनमें से कई मेनलैण्ड पर देखे गए, विश्व की सर्वाधिक संकटग्रस्त प्रजाति में से एक, ऑरैंज बैलीड पैरैंट्स, के लिए यह बहुत ही अच्छी खबर है। ज्ञातव्य है कि 5 साल पहले इनकी आबादी मात्र 17 ही थी। प्रोग्राम से जुड़ी, वन्यजीव जीववैज्ञानिक शैनन ट्रॉय ने कहा कि 80 के दशक के अन्त और नब्बे के दशक के शुरू में जो स्थिति थी उसकी तुलना में यह बहुत अच्छी स्थिति है। ऑरैंन्ज बैलीड तोते हर साल सर्दी में ऑस्ट्रेलिया के दक्षिणी तट पर प्रवास के लिए जाते हैं, लेकिन हरेक पक्षी प्रवास में जीवित नहीं रह पाता, और जो जीवित बचते हैं वे गर्मी में प्रजनन के लिए मैलालूका लौट आते हैं। लगभग एक दशक के बाद गत वर्ष नवम्बर में 51 पक्षी प्रजनन के लिए लौटे थे। प्रजनन के मौसम में शोधकर्ताओं ने संरक्षित केन्द्रों से 31 वयस्क तोतों का पुनर्वास किया, ताकि नर और मादा का संतुलन बना रहे और प्रजनन करने वाले जोड़ों की संख्या बढ़े। इस अवधि में 88 चूजे जन्मे। शोधकर्ताओं को ऐसे ही नतीजे की उम्मीद थी, पर जब तक उन्होंने चूजों को देखा नहीं, उन्हें यकीन नहीं हुआ। प्रजनन काल के अंत में शोधकर्ताओं ने 49 और चूजों का पुनर्वास किया। ट्रॉय ने कहा इसका कारण यह था कि, संरक्षित केन्द्रों में पले वयस्क तोते प्रजनन में तो अच्छे होते हैं पर प्रवास में नहीं। उम्मीद है कि अवयस्क तोतों को जंगल में छोड़ने से वे जंगल में रहने के तौर तरीके सीख पाएंगे और शायद प्रवास भी पूरा कर पाएं और जीवित भी रहें। ट्रॉय ने कहा शोधकर्ताओं ने इस वर्ष प्रवास शुरु होने से पहले 30 से 40 पक्षियों के झुण्ड देखे थे। टैस्मेनिया के शोधकर्ता राज्य सरकार के साथ मिलकर काम कर रहे हैं और उनकी योजना ऐसे वृक्ष लगाने की है जो इन पक्षियों के भोजन का स्रोत हैं।

सोनिया जी राहुल के अलावा किसी अन्य को कांग्रेसाध्यक्ष नहीं बनने देंगी?

इस सोच के साथ ऐसे ही संकेत नजर आ रहे हैं कि, गांधी परिवार पार्टी पर अपनी पकड़ और मजबूत करने के प्रयास में जुटा है

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3 मई। चार राज्यों के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की निर्णायक हार के बाद राहुल व उनके करीबी लोगों द्वारा पार्टी संचालन के तरीके पर राहुल गांधी और प्रियंका गांधी में दरारें उभर रही हैं।

एक निर्णायक कदम के तहत प्रियंका गांधी के एक निकट सहयोगी और उनके सलाहकार प्रमोद कृष्णन ने ट्वीट किया कि चार राज्यों पश्चिम बंगाल, पुड्डुचेरी, असम और केरल, जहां कांग्रेस की निर्णायक हार हुई है, के पी.सी.सी. अध्यक्षों, आई.सी.सी. प्रभारियों तथा संगठन महासचिव के.सी. वेणुगोपाल को तुरंत अपना इस्तीफा दे देना चाहिए ताकि ''राहुल जी द्वारा स्थापित नैतिक मूल्यों की रक्षा हो सके।''

इसमें राहुल गांधी के लिए भी संदेश निहित है कि उन्हें अपने लोगों से जिम्मेदारी लेने को कहना चाहिए। और उत्तरदायित्व तय करना चाहिए। निश्चित रूप से यह समय नहीं है कि नेतृत्व विचार करे, निर्णय ले और कार्यवाही करे।

- **हालांकि एक चर्चा यह भी उभरी है कि, राहुल व प्रियंका में दूरी बढ़ी है, तथा प्रियंका गांधी के विश्वासी प्रमोद कृष्णम ने ट्वीट किया है कि, बंगाल, पुड्डुचेरी, असम व केरल के प्रभारी व प्रदेशाध्यक्ष को, चुनाव इंचार्ज को इस्तीफा दे देना चाहिए।**
- **मैसेज है कि लोग हार की जिम्मेवारी स्वीकार करें व जवाबदेही न टालें।**
- **सबसे ज्यादा विरोध-आक्रोष वेणुगोपाल व रणदीप सिंह सुरजेवाला के खिलाफ दिख रहा है।**

पार्टी में दो लोग हैं जो सभी के निशाने पर हैं, ये हैं वेणुगोपाल और रणदीप सिंह सुरजेवाला।

दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय शीला दीक्षित के पुत्र संदीप दीक्षित ने एक वीडियो जारी किया जिसमें वे तुरंत जिम्मेदारी लेने की बात कहते हुए दिख रहे हैं।

उन्होंने कहा कि सभी अधिकार एक ही व्यक्ति में निहित नहीं कर देने चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि क्योंकि दरबारी संस्कृति को खत्म कर देना चाहिए क्योंकि विभिन्न नेताओं से जुड़े ये दरबारी अपने -अपने नेता के लिए काम करते हैं पार्टी के लिए नहीं।

हर तरफ से यही प्रहार हो रहा है कि कोई भी पार्टी के बारे में क्यों नहीं सोच रहा है क्यों सब व्यक्तियों के बारे में ही सोच रहे हैं। पार्टी की एक युवा नेता रागिनी नायक ने ट्वीट किया कि नेताओं को भाजपा और नरेन्द्र मोदी की हार पर खुश होना बंद करना होगा बल्कि यह सोचना होगा कि कांग्रेस क्यों हार रही है।

उनके इस ट्वीट को एक लाख से ज्याद लाइक्स मिले हैं। इससे पता चलता है कि पार्टी के युवा कार्यकर्ताओं में पार्टी चलाने के तरीके पर कितना रोष है।

अभी तक किसी भी वरिष्ठ नेता ने नतीजों के बारे में नहीं बोला सिवाय गुलाम नबी आजाद के, उन्होंने कहा कि यह समय है कि पार्टी एकजुट रहे और करोना से संघर्ष करे।

उन्होंने संकेत दिया कि असम और केरल में कांग्रेस की हार एक गंभीर विषय है और इस पर बाद में चर्चा की जाएगी।

सूत्रों का कहना है कि इस हार में गांधी परिवार के लिए उत्तराधिकार योजना पर आगे बढ़ना और स्थिर नेतृत्व के लिए रास्ता साफ करना कठिन हो जाएगा।

एक वरिष्ठ नेता ने कहा जब तक सोनिया गांधी शीर्ष पर है वे राहुल गांधी के अलावा किसी को भी कांग्रेस अध्यक्ष नहीं बनने देगी और अब सारे संकेत यही कहते हैं कि गांधी पार्टी पर अपनी पकड़ मजबूत करने का प्रयास कर रहे हैं और पार्टी की कमान किसी गैर गांधी के हाथ में देने को तैयार नहीं है।

कांग्रेस, मार्क्सवादी पार्टी व आई. एस. पी. का आत्मघाती बलिदान भी कारण था ममता की जीत का

कांग्रेस व मार्क्सवादियों के बीच 15 से 17 प्रतिशत मतों का वोट बैंक था, पर दोनों ने अपने वोट तृणमूल को ट्रांसफर कराये

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3 मई। तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ममता बनर्जी, जिन्हें अपनी पार्टी को भारी जीत दिलाने का पूरा श्रेय दिया जा रहा है, ने बहुत सख्ती से आदेश दिए हैं कि विजय का उत्सव नहीं मनाया जाएगा। यह उल्लास उस समय मनाया जाएगा जब करोना महामारी चली जाएगी।

तथापि, राजनीतिक पर्यवेक्षक कह रहे हैं कि वो दूसरे लोगों की विजय का उत्सव कैसे मनाएं जबकि वो स्वयं उस प्रतिद्वंदी (सुवेन्दु अधिकारी) से हार गई है जिससे वो बहुत घृणा करती हैं। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत हार को बहुत बड़ा मुद्दा नहीं बनाया है, लेकिन जबकि मुख्यमंत्री स्वयं हार गई है, ऐसे में जीत का उत्सव मनाना हास्यास्पद होगा।

- **दोनों पार्टियों को एक सीट नहीं मिली, पर उनके वोटों से तृणमूल कई वो सीटें जीत पायी जो शायद उसकी झोली में नहीं जातीं।**
- **मार्क्सवादी पार्टी के कई उम्मीदवारों की जमानत भी जब्त हुई, तथा मुर्शीदाबाद व मालदा जिलों में कांग्रेस का भी काफी बड़ा परंपरागत वोट बैंक था, जो उसने बलि चढ़ाया।**
- **भाजपा ने भी कई गलत निर्णय लिये, जिस प्रकार होलसेल में तृणमूल से आये नेताओं को उम्मीदवार बनाया गया वह शायद सही निर्णय नहीं था। न तो पुराने नेताओं को यह निर्णय रास आया और न ही जनता ने इसे स्वीकार किया।**

उन्होंने पुनः मतगणना के आदेश दिए थे और रात के दो बजे तक गणना के कई राउण्ड हुए थे, जब अंततः अधिकारी की विजय की घोषणा की गई। वो इसे एक राजनीतिक मुद्दा बनाने की कोशिश कर रही है।

ममता बनर्जी ने अब यह मुद्दा कोर्ट में ले जाने और चुनौती देने की कसम खाई है। तथापि, इस लड़ाई ने अंततः, चुनाव में अपराजित होने के ममता के मिथक को खत्म कर दिया है।

चुनाव के अंदरूनी घटनाक्रम के बारे में खबरें अब उभर रही है।

तृणमूल की शानदार जीत ममता बनर्जी के करिश्मा या जनता की नब्ज पर उनकी पकड़ का नतीजा नहीं है बल्कि अन्य पार्टियों द्वारा चुनावों में भाजपा को निशाना बनाने की आत्मघाती शैली की देन है। अब यह स्पष्ट है कि माकपा, कांग्रेस और आई.एस. पी. (मुस्लिमतीर्थ फुरफुरा शरीफ द्वारा बनाया गया राजनैतिक संगठन) के मोर्चा ने भाजपा को हराने के लिए अपना वोट तृणमूल को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'करोना काल में स्कूल फीस में 15 फीसदी छूट दें'

जयपुर, 3 मई। सुप्रीम कोर्ट ने निजी स्कूल संचालकों को करोना काल के शैक्षिणक सत्र 2020-21 की फीस में पन्द्रह फीसदी की छूट देने को कहा है। अदालत ने कहा कि स्कूल संचालक फीस एक्ट, 2016 के तहत शैक्षिणक सत्र 2019-20 की फीस के आधार पर विद्यार्थियों की वार्षिक फीस तय करेंगे और इसमें 15 फीसदी की छूट देंगे। यह फीस 8 फरवरी 2021 से 5 अगस्त 2021 तक छह समान किश्तों में देनी होगी। वहीं स्कूल संचालक शैक्षिणक सत्र 2021-22 में पूरी फीस वसूलने के लिए स्वतंत्र हैं। दूसरी ओर अदालत ने स्पष्ट किया कि फीस जमा नहीं होने पर स्कूल संचालक किसी भी विद्यार्थी का नाम नहीं काटेंगे और न ही उसे ऑनलाइन या फिज़िकल क्लास में शामिल होने से रोका जाएगा। और इस आधार पर उसका परीक्षा परिणाम भी नहीं रोका जा सकेगा।

- **सुप्रीम कोर्ट ने निजी स्कूलों के संचालकों को यह रियायत देने के आदेश दिये।**

न्यायाधीश ए.एम. खानविलकर और न्यायाधीश दिनेश माहेश्वरी की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ममता बनर्जी की राष्ट्रीय स्तर की भूमिका संदिग्ध क्यों है?

सबसे बड़ी बाधा है ममता बनर्जी की ''एकला चलो रे'' की नीति

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3 मई। पश्चिम बंगाल में तीसरी बार ममता बनर्जी की महाविजय और इसके साथ ही केरल में एल.डी.एफ. के पिनाराई विजयन तथा तमिलनाडु में द्रमुक (डी.एम.के) एम.के स्टालिन की जीत से राष्ट्रीय स्तर पर एक गैर भाजपा मोर्चे के गठन की अवास्तविक आशायें पैदा होती प्रतीत हो रही है।

ममता बनर्जी की जीत के बारे में दो पहलुओं पर ध्यान देने की जरुरत है। पहला, पश्चिम बंगाल की जीत को ममता की जीत के बजाए, अपनी गैर यथार्थ महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने की भाजपा की असफलता के रुप में देखा जाना चाहिए। वस्तुतः वामदलों तथा कांग्रेस को प्रमुख विपक्ष दल के स्थान से हटाने से भाजपा नेता कुछ तर्कसंगत राहत का अनुभव कर सकते हैं।

जैसा पर्यवेक्षक कह रहे हैं, प्रशासनिक खामियों, जिनमें ''कट मनी'' संस्कृति को रोकने में उनकी असमर्थता शामिल है,के अलावा ममता की काम करने की तानाशाही शैली ऐसे उल्लेखनीय कारक थे, जिन्होंने अपना आधार बनाने में भाजपा की मदद की तथा तृणमूल कांग्रेस के नेताओं और कार्यकर्ताओं को झुण्ड के झुण्ड अपनी पार्टी को छोड़कर भाजपा में शामिल हुए। और दूसरा कारक,ममता, अपने तमाम धैर्य एवं करिश्मा के बावजूद, मूलरुप से ऐसा एक अकेला व्यक्तित्व बनी रहीं, जिसमें अन्य लोगों को साथ लेने की क्षमता नहीं है। उदाहरण के लिए, अभी-अभी समाप्त हुए चुनावों में, उन्होंने सभी सीटों के लिए अपनी ही पार्टी के प्रत्याशी खड़े किये थे तथा उन्होंने एन.सी.पी. के शरद पवार, समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव या आर. जे.डी. के तेजस्वी यादव जैसे अन्य नेताओं को एक भी सीट आवंटित नहीं की थी। इन पार्टियों की नाम मात्र की उपस्थिति भी, चुनावी सभाओं को और भी बड़ा रुप प्रदान कर सकती थी तथा उनके नेतृत्व को एक समेकित स्तर प्रदान करते हुए, उन्हें विपक्षी खेमे के एक सर्वस्वीकार्य नेता के रुप में, सबको साथ लेकर चलने वाले नेता के रुप में प्रतिष्ठापित करने में मदद कर सकती थी।

- **उदाहरण के लिए, विधानसभा चुनाव में भी शरद पवार, तेजस्वी यादव व अखिलेश यादव को उन्होंने एक भी सीट देने से साफ इंकार कर दिया था।**
- **न ही उन्होंने इन नेताओं व पार्टियों का कोई सहयोग स्वीकार किया चुनाव में।**

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'सुकू-इफैक्ट'

-श्रीधर-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3 मई। 'सुकु-प्रभाव' (सुकु-इफैक्ट) केरल की राजनीति का एक नया राजनैतिक मुहावरा बन चुका है। 'सुकु-प्रभाव' का अर्थ है-सुकुमारन प्रभाव, जिसका असली तात्पर्य है-विपरीत प्रभाव या नुकसानदेह प्रभाव। सुकुमारन नय्यर एक महत्वपूर्ण हिन्दू जाति ''नय्यर'' के निर्विवाद नेता हैं। इस जाति को 'मेनन' तथा 'पिल्लई' जातिवाचक नाम (सरनेम) से भी जाना जाता है।

- **केरल की राजनीति में यह नया राजनीतिक मुहावरा उभरा है, जिसका मतलब है, उल्टा प्रभाव पड़ना।**

सुकुमारन नय्यर इस विवादास्पद अपील के बाद सुर्खियों में आये थे जिसमें उन्होंने अपने अनुयायियों से वाम-मोर्चे को पराजित करने के लिए कहा था। यह अपील मतदान वाले दिन ही सुबह टी.वी.चैनलों के माध्यम से की गई थी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ममता बनर्जी की जीत भाजपा ही नहीं कांग्रेस के लिए भी खतरे की घंटी है

कांग्रेस को विपक्ष का नेतृत्व शायद अब ममता बनर्जी को सौंपना होगा

-डॉ.सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 3 मई। शीघ्र ही तीसरी बार पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री बनने वाली ममता बनर्जी, जिन्होंने घमासान चुनावी लड़ाई में कल आश्चर्यजनक जीत अपने नाम कर ली, मोदी-शाह के हुक्म की गुलाम बन चुकी उस भाजपा के लिए एक चुनौती बनने की स्थिति में आ गई है जिसकी कोशिश देश की राजनैतिक सत्ता पर एकाधिकार प्राप्त करने की है।

इसके साथ ही, ममता बनर्जी, जिनका प्रधानमंत्री को सत्ता से बेदखल करने के लिए विपक्ष के नेता के रुप में उभरकर आना लगभग तय है, ने नेहरु-गांधी नेतृत्व को भी पीछे धकेल दिया है क्योंकि बहुत ज्यादा कमजोर हो चुकी कांग्रेस भाजपा-विरोधी राजनीति को नेतृत्व प्रदान करने की स्थिति में नहीं रही है। भाजपा-विरोधी राजनीति पर अब क्षेत्रीय नेताओं का दबदबा कायम होने का समय आ रहा है।

कांग्रेस के पास अब बहुत ही सीमित विकल्प बचे हैं क्योंकि इसकी राजनैतिक प्रासंगिकता तेजी से कम हो रही है। इसे अपने घर को व्यवस्थित करने की जरुरत है तथा इसके लिए जरुरी है-संगठनात्मक चुनाव कराया जाए तथा एक नया अध्यक्ष चुना जाए, जो गांधी परिवार का ना हो तो बेहतर है। कांग्रेस को विपक्ष की राजनीति में ममता बनर्जी का नेतृत्व स्वीकार करना होगा तथा अपनी एकजुटता एवं ताकत को बढ़ाना होगा।

- **यह माना जा रहा है कि, ममता बनर्जी शायद इस बार स्वयं मु. मंत्री पद नहीं संभालेंगी, वरन केन्द्र में राष्ट्रीय स्तर पर विपक्ष की लड़ाई का नेतृत्व करेंगी, गणतंत्र वाद (फैडरलिज़्म) को बचाने के लिए।**
- **इस लड़ाई की शुरुआत वो चुनाव आयोग के खिलाफ मोर्चा खोल कर करेंगी।**

चूंकि बंगाल के चुनाव परिणामों ने टी. एम. सी. की चमत्कारी जीत सुनिश्चित कर दी है, इसलिए ममता बनर्जी अपनी आगामी भूमिका के बारे में पर्याप्त संकेत दे रही हैं। उनकी तरफ से ऐसे पर्याप्त संकेत आ रहे हैं कि राज्यों के हितों का समर्थन करते हुए, तथा संविधान में प्रतिष्ठापित संघवाद के सिद्धान्तों को कायम रखते हुए, वे आक्रामक भूमिका में आने की तैयारी कर रही हैं।

उनकी पहली तथा सुनिश्चित लड़ाई भारत के चुनाव आयोग के खिलाफ होगी जिसकी भ्रष्ट एवं समझौतावादी तथा मोदी सरकार समर्थक नीतियों को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी जायेगी। इस कदम को उठाने के लिए, वे सबसे पहले विपक्ष के प्रमुख नेताओं के साथ विचार विमर्श करेंगी तथा एक सर्वस्वीकार्य रणनीति तैयार की जायेगी।

उनके नजदीकी सूत्रों ने संकेत दिया है कि वे बंगाल का मुख्यमंत्री पार्टी के किसी अन्य नेता को बनायेंगी किन्तु वे ऐसा कदम अभी नहीं, बल्कि कुछ समय बाद, अर्थात उस समय उठायेंगी, जब अगले लोकसभा चुनाव आने वाले होंगे तथा वे विपक्ष की निर्विवादित नेता के रुप में उभर कर आ चुकी होंगी।

ममता बनर्जी ने आज कह दिया कि भाजपा, जो केन्द्र की सत्ता में है, कोई ''शहंशाह नहीं'' है तथा बंगाल की जनता ने उसे उसकी औकात दिखा दी है। बंगाल की मुख्यमंत्री ने कहा, ''जनता ने तबाही को रोक दिया है। रीढ़ बिल्कुल सीधी हो गई है। उन्होंने चुनाव से पहले, लोगों को बार-बार कहा था

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

महेश जोशी ने मानी गलती

जयपुर, 3 मई (का.प्र.)। करोना का प्रकोप बढ़ रहा है ऐसे में एक विवाह समारोह में जाना और फिर वहां बिना मास्क के फोटो खिंचाना इस समय करोना गाइडलाइन के खिलाफ था। हालांकि उस समय ध्यान किसी का नहीं गया लेकिन जब मीडिया ने ये तस्वीरें छापी और कहा कि सरकार में शामिल लोग ही ऐसी गलती करेंगे तो आम जनता को कैसे संदेश देंगे। मीडिया में इन खबरों के आने के बाद अपनी गलती मानते हुए मुख्य सचेतक महेश जोशी ने सोमवार को 500 रुपए का चालान कटवाया है।

- **विवाह समारोह में बिना मास्क के शामिल होने पर 500 रुपए का चालान कटवाया।**

जोशी 2 दिन पहले एक विवाह समारोह में शामिल हुए थे, जिसमें उन्होंने दूल्हे के साथ बिना मास्क पहने हुए तस्वीर खिंचवाई। यह विवाह जयपुर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)